C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (ब)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. (अ) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×4)(1×1) = 9

महात्मा गांधी ने कोई 12 साल पहले कहा था - मैं बुराई करने वालों को सजा देने का उपाय ढूँढ़ने लगूँ तो मेरा काम होगा उनसे प्यार करना और धैर्य तथा नम्रता के साथ उन्हें समझाकर सही रास्ते पर ले आना। इसलिए असहयोग या सत्याग्रह घृणा का गीत नहीं है। असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।

आपके असहयोग का उद्धेश्य बुराई को बढ़ावा देना नहीं है। अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई अपने लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने-आप मर जाए। अगर हम यह देखने की कोशिश करें कि आज समाज में जो बुराई है, उसके लिए खुद हम कितने जिम्मेदार हैं तो हम देखेंगे कि समाज से बुराई कितनी जल्दी दूर हो जाती है। लेकिन हम प्रेम की एक झूठी भावना में पड़कर इसे सहन करते हैं। मैं उस प्रेम की बात नहीं करता, जिसे पिता अपने गलत रास्ते पर चल रहे पुत्र पर मोहांध होकर बरसाता चला जाता है, उसकी पीठ थपथपाता है; और न मैं उस पुत्र की बात कर रहा हूँ जो झूठी पितृ-भक्ति के कारण अपने पिता के दोषों को सहन करता है। मैं

उस प्रेम की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। मैं तो उस प्रेम की बात कर रहा हूँ, जो विवेक युक्त है और जो बुद्धियुक्त है और जो एक भी गलती की ओर से आँख बंद नहीं करता है। यह सुधारने वाला प्रेम है।

1. गांधीजी बुराई करने वालों को किस प्रकार सुधारना चाहते हैं?
2. बुराई को कैसे समाप्त किया जा सकता है?
3. 'प्रेम' के बारे में गांधीजी के विचार स्पष्ट कीजिए।
4. असहयोग से क्या तात्पर्य है?
5. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

प्र. 1. (ब) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2x3=6

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन!
हम तो रमते राम, हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वतन?
अब तक इतनी यों ही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी
कौन बनाए आज घरौंदा हाथों चुन-चुन कंकड़-माटी
ठाठ फ़कीराना है अपना, बाघंबर सोहे अपने तन।
देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मज़े के
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शिणित उद्वेलन।
हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या ख़ाक बनाएँगे घर
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर
हम क्यों सनें ईंट-गारे में? हम क्यों बनें व्यर्थ में बेमन?
ठहरे अगर किसी के दर पर, कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जा देखो कोई घर
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन।

1. कवि अपने को कैसा बताता है और क्यों?
2. कवि का अब तक का जीवन कैसा कटा है?

3. कवि अपना (सदन) घर बनाने को इच्छुक क्यों नहीं है?

खंड - 'ख'

प्र. 2. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए : 2

- शिक्षा
- चिह्न

प्र. 3. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर चंद्रबिंदु का प्रयोग कीजिए : 3

- बूद
- टाग

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ते का प्रयोग कीजिए :

- फन
- गालिब

ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर बिंदु का प्रयोग कीजिए :

- गन्गा
- चन्चल

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए: 3

- पालना
- झूला

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए:

- परिणाम
- प्रबल

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए:

- बेरहम

- परिमार्जन

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न का प्रयोग करें: 3

1. हाँ तुम ऐसा कह सकते हो
2. हाय बेचारा व्यर्थ में मारा गया
3. तुम य़हाँ क्यों आये

प्र. 6. निम्नलिखित शब्दों के सही संधि-विच्छेद कीजिए: 4

- रविन्द्र
- भारतेन्दु
- धनैषणा
- अन्वय

खंड 'ग'

प्र. 7. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर लिखिए: (2+2+1)=5

1. पहाड़ लुप्त कर देने वाले कीचड़ की क्या विशेषता है?
2. कौन-सा कार्य देश की स्वाधीनता के विरूद्ध समझा जाएगा?
3. लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय किस तरह दिया?

प्र. 7. (ब) महात्मा गाँधी के धर्म-संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए। 5

प्र. 8. (अ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)=5

1. 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से क्या अभिप्राय है?
2. 'माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?
3. बीमार बच्ची ने क्या इच्छा प्रकट की?

प्र.8. (ब) निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए: 5

1. 'मोती, मानुष, चून' के संदर्भ में पानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

प्र. 9. कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन लिखिए। 5

खंड - 'घ'

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए। 5

- 'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।'
- समुद्र तट की सैर

प्र. 11. आप अपने घर से दूर में रहने आए है, अपनी माता को पत्र लिखकर छात्रावास के आपके अनुभव के बारे में लिखिए।

प्र. 12. दिए गए चित्र का वर्णन करें: 5

प्र. 13. फूल बेचनेवाला और एक बूढ़े व्यक्ति के बीच हो रहा संवाद लिखिए। 5

प्र. 14. स्थानीय हिन्दी मासिक पत्रिका के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (ब)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. (अ) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×4)(1×1) = 9

महात्मा गांधी ने कोई 12 साल पहले कहा था - मैं बुराई करने वालों को सजा देने का उपाय ढूँढ़ने लगूँ तो मेरा काम होगा उनसे प्यार करना और धैर्य तथा नम्रता के साथ उन्हें समझाकर सही रास्ते पर ले आना। इसलिए असहयोग या सत्याग्रह घृणा का गीत नहीं है। असहयोग का मतलब बुराई करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।

आपके असहयोग का उद्धेश्य बुराई को बढ़ावा देना नहीं है। अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई अपने लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने-आप मर जाए। अगर हम यह देखने की कोशिश करें कि आज समाज में जो बुराई है, उसके लिए खुद हम कितने जिम्मेदार हैं तो हम देखेंगे कि समाज से बुराई कितनी जल्दी दूर हो जाती है। लेकिन हम प्रेम की एक झूठी भावना में पड़कर इसे सहन करते हैं। मैं उस प्रेम की बात नहीं करता, जिसे पिता अपने गलत रास्ते पर चल रहे पुत्र पर मोहांध होकर बरसाता चला जाता है, उसकी पीठ थपथपाता है; और न मैं उस पुत्र की बात कर रहा हूँ जो झूठी पितृ-भक्ति के कारण अपने पिता के दोषों को सहन करता है। मैं

उस प्रेम की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। मैं तो उस प्रेम की बात कर रहा हूँ, जो विवेक युक्त है और जो बुद्धियुक्त है और जो एक भी गलती की ओर से आँख बंद नहीं करता है। यह सुधारने वाला प्रेम है।

1. गांधीजी बुराई करने वालों को किस प्रकार सुधारना चाहते हैं?
   उत्तर : गांधीजी बुराई करने वालों को प्रेम, धैर्य तथा नम्रता के साथ समझाकर सुधारना चाहते हैं।

2. बुराई को कैसे समाप्त किया जा सकता है?
   उत्तर : यदि हम बुराई को बढ़ावा देना बंद कर देंगे तो बुराई स्वयं समाप्त हो जाएगी।

3. 'प्रेम' के बारे में गांधीजी के विचार स्पष्ट कीजिए।
   उत्तर : गांधीजी के अनुसार प्रेम का अर्थ मोह में अंधा होकर अपने प्रिय की गलतियों का समर्थन करना या बढ़ावा देना नहीं है। बल्कि उनके अनुसार उन गलतियों को सुधारना ही सही अर्थों में प्रेम की परिभाषा है।

4. असहयोग से क्या तात्पर्य है?
   उत्तर : असहयोग का मतलब बुरा करने वाले से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है। अर्थात् बुराई का त्याग करना ही असहयोग है।

5. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
   उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक 'प्रेम और अहिंसा' है।

प्र. 1. (ब) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2x3=6

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन!
हम तो रमते राम, हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वतन?
अब तक इतनी यों ही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी
कौन बनाए आज घरौंदा हाथों चुन-चुन कंकड़-माटी
ठाठ फ़कीराना है अपना, बाघंबर सोहे अपने तन।
देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मज़े के
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शिणित उद्वेलन।
हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या ख़ाक बनाएँगे घर
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर
हम क्यों सनें ईंट-गारे में? हम क्यों बनें व्यर्थ में बेमन?
ठहरे अगर किसी के दर पर, कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जा देखो कोई घर
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन।

1. कवि अपने को कैसा बताता है और क्यों?

उत्तर : कवि अपने आप को बिना घर-बार का बताता है। वह ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि वह तो रमता राम है, वह घूमता-फिरता रहता है। उसका न तो कोई घर है, न कोई ठिकाना और न ही उसका कोई देश है।

2. कवि का अब तक का जीवन कैसा कटा है?

उत्तर : कवि ने अपना जीवन घूमने-फिरने में ही व्यतीत कर दिया है। कवि ने फकीराना जीवन जीया है और वैसे ही रहना चाहता है। वह अब किसी नई परिपाटी को नहीं सीखना चाहता है।

3. कवि अपना (सदन) घर बनाने को इच्छुक क्यों नहीं है?

उत्तर : कवि अपना घर बनाने का इच्छुक इसलिए नहीं है क्योंकि वह किसी बंधन में बँधकर नहीं रहना चाहता। कवि ने अनुभव किया है कि घर बनाने के चक्कर में लोगों का अपनापन चला गया।

खंड - 'ख'

प्र. 2. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण विच्छेद कीजिए : 2

- शिक्षा = श् + इ + क् + ष् + आ
- चिह्न = च् + इ + ह् + न् + अ

प्र. 3. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर चंद्रबिंदु का प्रयोग कीजिए : 3

- बूद - बूँद
- टाग - टाँग

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर नुक्ते का प्रयोग कीजिए :

- फन - फ़न
- गालिब - ग़ालिब

ग) निम्नलिखित शब्दों में उचित स्थानों पर बिंदु का प्रयोग कीजिए :

- गन्गा - गंगा
- चन्चल - चंचल

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए: 3

- पालना - ना
- झूला - आ

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए:

- परिणाम - परि

- प्रबल - प्र

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए:

- बेरहम - बे + रहम
- परिमार्जन - परि + मार्जन

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिह्न का प्रयोग करें: 3

1. हाँ तुम ऐसा कह सकते हो
   उत्तर : हाँ, तुम ऐसा कह सकते हो।

2. हाय बेचारा व्यर्थ में मारा गया
   उत्तर : हाय ! बेचारा व्यर्थ में मारा गया।

3. तुम य़हॉ क्यों आये
   उत्तर : तुम य़हॉ क्यों आये?

प्र. 6. निम्नलिखित शब्दों के सही संधि-विच्छेद कीजिए: 4

- रविन्द्र = रवि + इंद्र
- भारतेन्दु = भारत + इंदु
- धनैषणा = धन + एषणा
- अन्वय = अनु + अय

खंड 'ग'

प्र. 7. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर लिखिए: (2+2+1)=5

1. पहाड़ लुप्त कर देने वाले कीचड़ की क्या विशेषता है?
   उत्तर : पहाड़ लुप्त कर देने वाले कीचड़ की विशेषता है कि बहुत अधिक कीचड़ का होना। यह कीचड़ जमीन के नीचे बहुत गहराई तक होता है। ऐसा कीचड़ गंगा नदी के किनारे खंभात की खाड़ी सिंधु के किनारे पर होता है।

2. कौन-सा कार्य देश की स्वाधीनता के विरूद्ध समझा जाएगा?

उत्तर : हमारा देश स्वाधीन है। इसमें अपने-अपने धर्म को अपने ढंग से मनाने की पूरी स्वतंत्रता है। यदि कोई इसमें रोड़ा बनता है या धर्म की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने की कोशिश करते हैं तो वह कार्य देश की स्वाधीनता के विरूद्ध समझा जाएगा।

3. लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय किस तरह दिया?

उत्तर : लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय यह कह कर दिया कि वह बिल्कुल ही नौसिखिया है और एवरेस्ट उसका पहला अभियान है।

प्र. 7. (ब) महात्मा गाँधी के धर्म-संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए। 5

उत्तर : महात्मा गाँधी अपने जीवन में धर्म को सर्वोच्च स्थान देते थे। धर्म के बिना वे एक कदम भी चलने को तैयार नहीं थे। वे सर्वत्र धर्म का पालन करते थे। उनके धर्म के स्वरूप को समझना आवश्यक है। धर्म से महात्मा गांधी का मतलब, धर्म ऊँचे और उदार तत्वों का ही हुआ करता है। वे धर्म की कट्टरता के विरोधी थे। प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह धर्म के स्वरूप को भलि-भाँति समझ ले। वे सत्य और अहिंसा को ही परम धर्म मानते थे।

प्र. 8. (अ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)=5

1. 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से अभिप्राय ऋतु परिवर्तन और एक लंबे अंतराल से है। जिस प्रकार एक ऋतु और दूसरी ऋतु के बदलने में काफ़ी समय लगता है ठीक उसी प्रकार कवि भी काफ़ी

समय बाद अपने घर लौटे हैं। अत:उन्हें अपने घर को ढूँढने में मुश्किल हो रही है।

2. 'माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर : 'माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि यही कहना चाहता है कि मनुष्य को अपनी लक्ष्य प्राप्ति के लिए किसी भी प्रकार की अनपेक्षित चुनौतियों के लिए तैयार रहना चाहिए। उसे इस मार्ग में बिना किसी सहारे, सुखों की अभिलाषा और हर परिस्थिति का सामना करते हुए अपने लक्ष्य पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

3. बीमार बच्ची ने क्या इच्छा प्रकट की?

उत्तर : बीमार बच्ची जो कि तेज ज्वर से ग्रसित थी। उसने अपने पिता के सामने देवी के चरणों का फूल-रूपी प्रसाद पाने की इच्छा प्रकट की। इस इच्छा का कारण संभवत यह था कि उसे लगा कि देवी का प्रसाद पाकर वह ठीक हो जाएगी।

प्र.8. (ब) निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए: 5

1. 'मोती, मानुष, चून' के संदर्भ में पानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'मोती, मानुष, चून' के संदर्भ में पानी का महत्त्व यह है कि मोती को उसकी चमक पानी से ही प्राप्त होती है। मनुष्य के संदर्भ में पानी का अर्थ उसके मान-सम्मान से है और आटे के संदर्भ में उसे गूंथने और खाने योग्य बनाने से है। इस तरह तीनों का ही पानी के बिना महत्त्व कम हो जाता है।

प्र. 9. कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन लिखिए। 5

उत्तर : चिट्ठियाँ सूखे कुएँ में गिर पड़ी थीं। कुएँ में साँप था। कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ लाना बड़ा ही साहस का कार्य था। लेखक ने इस चुनौती का स्वीकार किया। लेखक ने छः धोतियों को जोड़कर डंडा बाँधा और एक सिरे को कुएँ में डालकर उसके दूसरे सिरे को कुएँ के चारों ओर घुमाने के बाद गाँठ लगाकर अपने छोटे भाई को पकड़ा दिया। लेखक इसी धोती के सहारे कुएँ में उतरा। जब वह धरातल के चार-पाँच गज उपर था, उसने साँप को फन फैलाए देखा। वह कुछ हाथ ऊपर धोती पकड़े लटका रहा ताकि वह उसके आक्रमण से बच जाए। साँप को धोती पर लटककर मारना संभव नहीं था और डंडा चलाने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी। उसने डंडे से चिट्ठियों को खिसकाने का प्रयास किया कि साँप डंडे से चिपक गया। साँप का पिछला हिस्सा लेखक के हाथ को छू गया। लेखक ने डंडा फेंक दिया। डंडा लेखक की ओर खीच आने से साँप का आसन बदल गया और लेखक ने तुरंत लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिए और उन्हें अपनी धोती के छोर में बाँध लिया।

खंड - 'घ'

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए। 5

'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।'

किसी विषय या कला में प्रवीणता प्राप्त करने का मूल-मंत्र अभ्यास है। अभ्यास द्वारा असंभव जान पड़ने वाले कार्य भी संभव हो जाते है। किसी लक्ष्य तक पहुँचना को अथवा विद्याध्ययन हो, सर्वत्र अभ्यास की आवश्यकता है। प्रतिभावान व्यक्ति भी यदि अभ्यास न करे तो वह आगे नहीं बढ़ सकता। एक विद्वान अथक अभ्यास परिश्रम से विद्वान बनता है। उसके पास कोई संजीवनी नहीं है कि वह बिना पढ़े लिखे ही विद्वान घोषित कर दिया जाता है। इसके पीछे उसका परिश्रम और अभ्यास ही है। अभ्यास के बल पर ही एकलव्य, तुलसीदास, वाल्मीकि और बोपदेव संस्कृत-प्राकृत के समर्थ वैयाकरण सिद्ध हुए। बोपदेव की कहानी प्रसिद्ध है।

गुरु के आश्रम से वह निराश होकर जा रहे थे कि विद्या उसके भाग्य में नहीं है। मार्ग में उसने कुएँ के चारों ओर लगे पत्थरों पर रस्सियों के निशान देखे। बस, उन्हें यह समझ में आ गया कि बार-बार घीसने से अगर पत्थर पर निशान हो सकते है तो, बार-बार अभ्यास करने से सफलता अवश्य प्राप्त होगी। अतः इसलिए कहा गया है कि करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।

रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान॥

समुद्र तट की सैर

मैं अपने परिवार के साथ चेन्नई घूमने गया। वहाँ पहुँचकर हम सभी शाम के समय समुद्र-तट की सैर पर निकले। इस समुद्र-तट की बात ही निराली है। चेन्नई में चारों ओर हरियाली ही हरियाली है। जब हम समुद्र-तट पर पहुँचे, तो सूर्यास्त होने वाला था। चारों ओर सुनहरी लालिमा फैली हुई थी। हल्की ठंडी हवा चल रही थी। समुद्र की लहरें उछल-उछलकर तट की ओर आतीं और उसे छूकर वापस चली जातीं। इतना मनोरम दृश्य देखकर मेरा मन प्रसन्नता से झूम उठा। हम सभी प्रकृति की सुषमा को निहार रहे थे। मैं भी उन उठती-गिरती लहरों के साथ खेलने लगा। वहीं मेरी बहन ने बहुत-से शंख और सीपियाँ इकट्ठे किए, सबने मिलकर नारियल पानी का आनंद लिया। समुद्र तट की यह सैर मेरे लिए जीवन भर के लिए यादगार बन गई।

प्र. 11. आप अपने घर से दूर में रहने आए है, अपनी माता को पत्र लिखकर छात्रावास के आपके अनुभव के बारे में लिखिए।

रामदेवी छात्रालय
सुभाष मार्ग
नागपुर।
22 फरवरी 20..
आदरणीय माताजी
सादर प्रणाम।

मैं यहाँ ठीक हूँ। आशा करती हूँ, आप सब वहाँ सकुशल होगे।
आप सबको छोड़कर पहली बार अकेली रह रही हूँ। मुझे आप सभी की बहुत याद आती है। पहले दो-तीन दिन जरा भी मन नहीं लगा परंतु अब बहुत-सी लड़कियाँ मेरी सहेलियाँ बन गई है। यहाँ के शिक्षक भी बहुत अच्छे है। कपड़े धोना, बिस्तर लगाना, सभी वस्तुएँ ठीक जगह पर रखना मैं सीख रही हूँ। मैं यहाँ मन लगाकर पढ़ रही हूँ।
पिताजी को मेरा प्रणाम और छोटी को प्यार देना।
तुम्हारी लाड़ली
मीना

प्र. 12. दिए गए चित्र का वर्णन करें: 5

उपर्युक्त चित्र सहायता से संबंधित है। यहाँ पर चार अलग-अलग चित्र है। पहले में दो लोग मिलकर तीसरे की सहायता कर रहे हैं तो दूसरे चित्र में एक व्यक्ति धन देकर दूसरे की सहायता कर रहा है। तीसरे चित्र में व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को ऊपर चढ़ने में सहायता कर रहा है तो चौथे चित्र में एक व्यक्ति अपना छाता दूसरे को देकर बरसात में उसकी सहायता कर रहा है। इस चित्र में एक दूसरे की सहायता का पाठ पढ़ाया गया है। परोपकार एक सर्वश्रेष्ठ भावना है। परोपकार से तात्पर्य दूसरों की सहायता करने से है। हमें प्रकृति से परोपकार का संदेश लेना चाहिए। सूर्य, चंद्रमा, तारे, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, पेड़ आदि दिन-रात मनुष्य के

कल्याण में लगे हुए हैं। ये सभी दूसरों के उपकार के लिए कुछ न कुछ देते हैं। सेवा या परोपकार की भावना चाहे देश के प्रति हो या किसी व्यक्ति के प्रति, वह मानवता है। परोपकार से ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग खुलता है। व्यक्ति जितना परोपकारी बनता है, उतना ही ईश्वर की समीपता प्राप्त करता है। परोपकार से मनुष्य जीवन की शोभा प्राप्त करता है। परोपकार से मनुष्य जीवन की शोभा और महिमा बढ़ती है। सच्चा परोपकारी सदा प्रसन्न रहता है। वह दूसरे का कार्य करके हर्ष की अनुभूति करता है।" दुनिया में शांति, अहिंसा, सहनशीलता, भाई चारे का संदेश फैलाना चाहिए। पेड़-पौधों, हरियाली, पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए है। सभी पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं के प्रति करूणा की भावना रखनी चाहिए। परोपकार की भावना से ही हम एक उत्तम राष्ट्र और विश्व का निर्माण कर सकते हैं।

प्र. 13. फूल बेचनेवाला और एक बूढ़े व्यक्ति के बीच हो रहा संवाद लिखिए। 5

फूलवाला : क्या चाहिए दादाजी?

बूढ़ा व्यक्ति : मोगरे के फूल कैसे दिए?

फूलवाला : यह १० रु. के है।

बूढ़ा व्यक्ति : इतने से ! हमारे जमाने में तो २ रु. के इससे ज्यादा मिलते थे। अब ५ रु. होगा।

फूलवाला : नहीं दादाजी आपका जमाना गया।

बूढ़ा व्यक्ति : हाँ मैं भी समझता हूँ, तभी तो ५ रु. बोल रहा हूँ।

फूलवाला : नहीं १० रु. ही है। महंगाई बढ़ गई है।

बूढ़ा व्यक्ति : अच्छा। क्या करे दे दो।

फूलवाला : और कुछ?

बूढ़ा व्यक्ति : नहीं बाबा इतनी महंगाई में एक ही बस है।

प्र. 14. स्थानीय हिन्दी मासिक पत्रिका के विज्ञापन का प्रारुप (नमूना) तैयार कीजिए : 5

हिन्दी मासिक –हिन्दी की कलम

बुझाईए अपनी नया
जानने की जिज्ञासा
अपनी हिन्दी में

हिन्दी मासिक –
हिन्दी की कलम

आर्डर के लिए संपर्क करें – ३७६१११०००